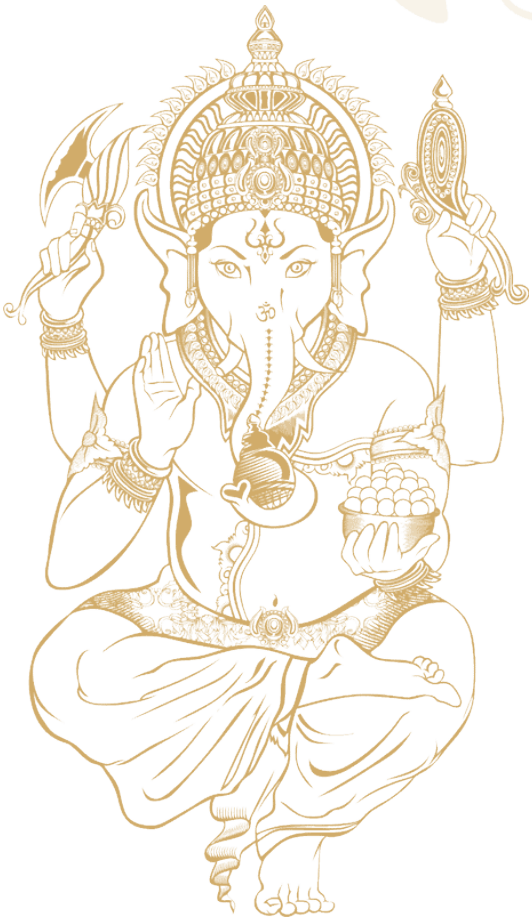

Mr.pranav

13 Nov 2003

05:29 AM

Simla

Model: Web-MyKundli

Order No: 119293201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**12-13/11/2003**
दिन	बुध-गुरुवार
जन्म समय	**05:29:00 घंटे**
इष्ट	56:48:48 घटी
स्थान	**Simla**
राज्य	Himachal Pradesh
देश	India

अक्षांश	31:06:00 उत्तर
रेखांश	77:10:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	05:07:40 घंटे
वेलान्तर	00:15:57 घंटे
साम्पातिक काल	08:34:28 घंटे
सूर्योदय	06:45:28 घंटे
सूर्यास्त	17:25:15 घंटे
दिनमान	10:39:46 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	26:16:23 तुला
लग्न के अंश	09:12:22 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**मिथुन - बुध**
नक्षत्र-चरण	**आर्द्रा - 1**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	सिद्ध
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	कू-कुणाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1925	कार्तिक	22
पंजाबी	संवत : 2060	कार्तिक	28
बंगाली	सन् : 1410	कार्तिक	27
तमिल	संवत : 2060	आइपसी	27
केरल	कोल्लम : 1179	तुलम	27
नेपाली	संवत : 2060	कार्तिक	28
चैत्रादि	संवत : 2060	मार्गशीर्ष	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2060	कार्तिक	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 14:41:33
जन्म तिथि _____: 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 24:49:28 घंटे
जन्म योग _____: आर्द्रा
सूर्योदय कालीन योग ____: शिव
योग समाप्ति काल _____: 13:29:54 घंटे
जन्म योग _____: सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 14:41:33 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 11:38:51
भभोग _____: 66:52:09
भोग्य दशा काल _____: राहु 14 वर्ष 10 मा 17 दि

घात चक्र

मास _____: आषाढ़
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: सोमवार
नक्षत्र _____: स्वाति
योग _____: परिघ
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: कर्क
सूर्य _____: मीन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: मेष
बुध _____: मकर
गुरु _____: वृष
शुक्र _____: मिथुन
शनि _____: कुम्भ
राहु _____: कर्क

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

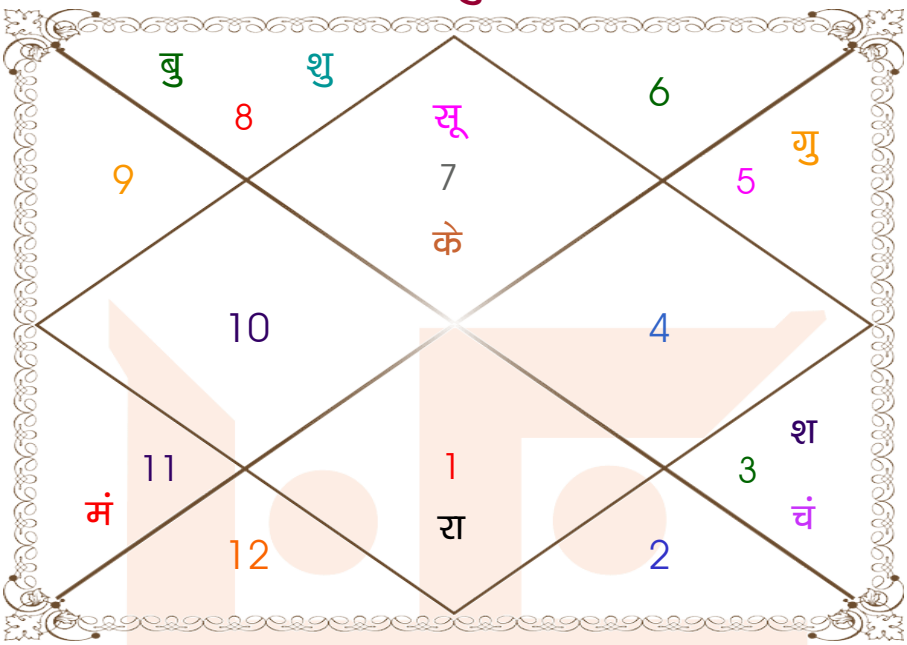

चन्द्र कुंडली

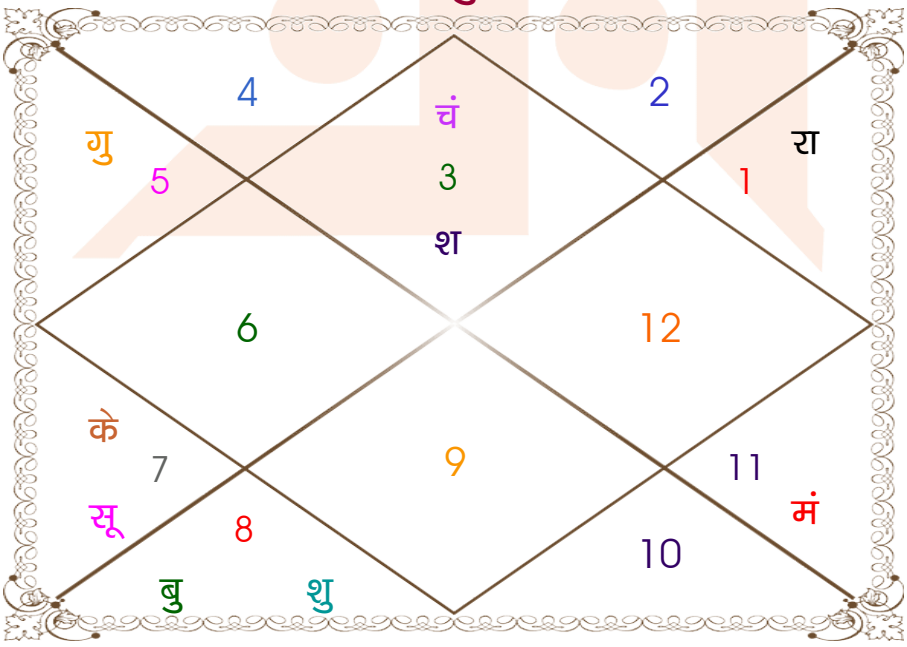

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

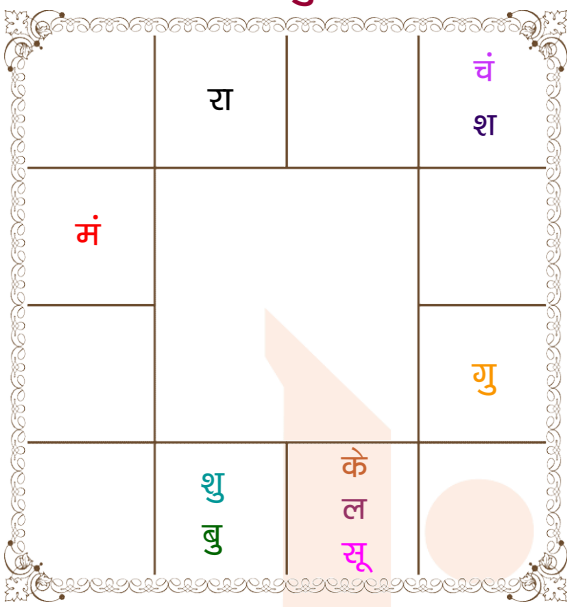

लग्न कुंडली

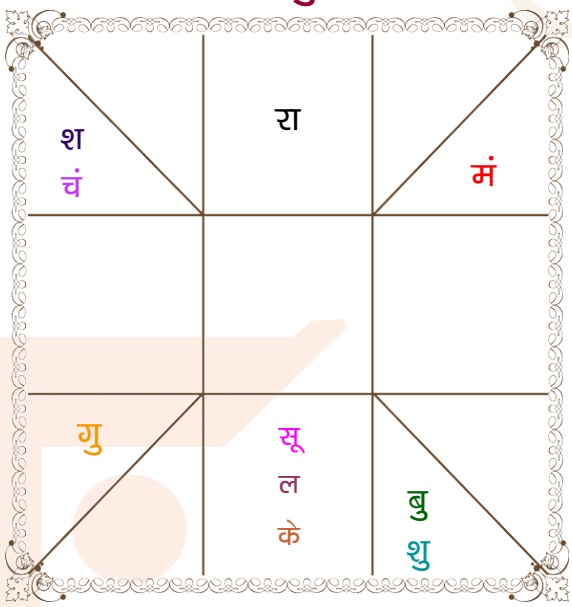

विंशोत्तरी

राहु 14वर्ष 10मा 17दि

राहु

13/11/2003

30/09/2120

राहु	30/09/2018
गुरु	30/09/2034
शनि	29/09/2053
बुध	30/09/2070
केतु	29/09/2077
शुक्र	29/09/2097
सूर्य	01/10/2103
चन्द्र	30/09/2113
मंगल	30/09/2120

योगिनी

मंगला 0वर्ष 9मा 28दि

सिद्धा

10/09/2024

10/09/2031

सिद्धा	20/01/2026
संकटा	11/08/2027
मंगला	21/10/2027
पिंगला	11/03/2028
धान्या	10/10/2028
भ्रामरी	21/07/2029
भद्रिका	11/07/2030
उल्का	10/09/2031

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	09:12:22	305:36:28	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	---
सूर्य			तुला	26:16:23	01:00:21	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	नीच राशि
चंद्र			मिथु	08:58:40	11:54:58	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	मित्र राशि
मंगल			कुंभ	18:25:41	00:27:20	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	सम राशि
बुध		अ	वृश्चि	07:09:16	01:31:36	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	सम राशि
गुरु			सिंह	21:00:47	00:08:31	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			वृश्चि	18:38:33	01:14:34	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	सम राशि
शनि	व		मिथु	19:01:59	00:01:58	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	मित्र राशि
राहु			मेष	26:31:53	00:00:03	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	शत्रु राशि
केतु			तुला	26:31:53	00:00:03	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	सम राशि
हर्ष			कुंभ	04:59:48	00:00:14	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	सूर्य	---
नेप			मक	16:37:01	00:00:43	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	---
प्लूटो			वृश्चि	24:46:29	00:02:03	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
दशम भाव			कर्क	12:19:34	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	मंगल	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:54:25

लग्न-चलित

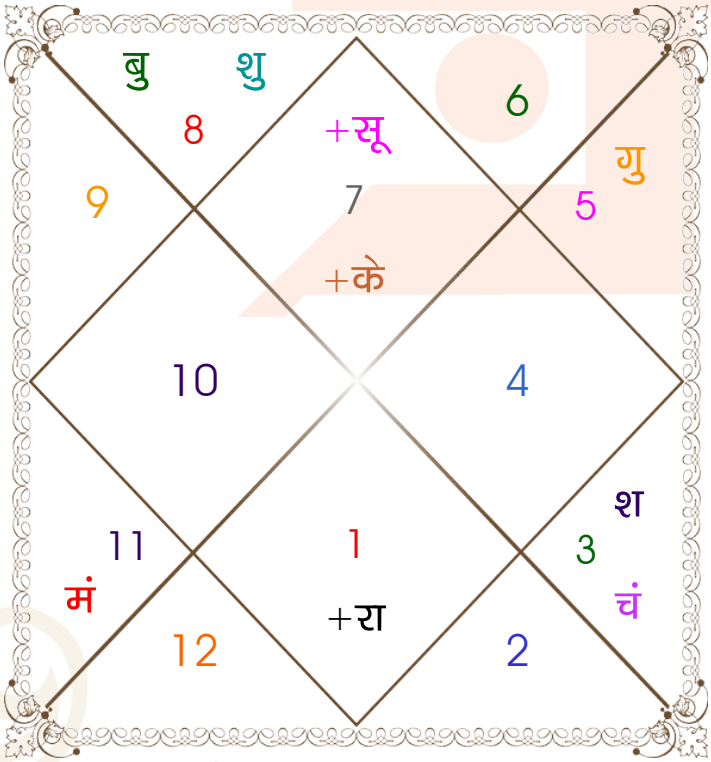

चन्द्र कुंडली

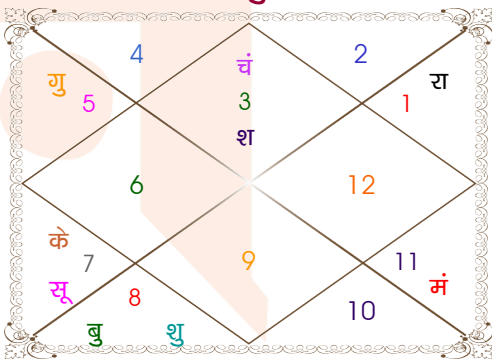

नवमांश कुंडली

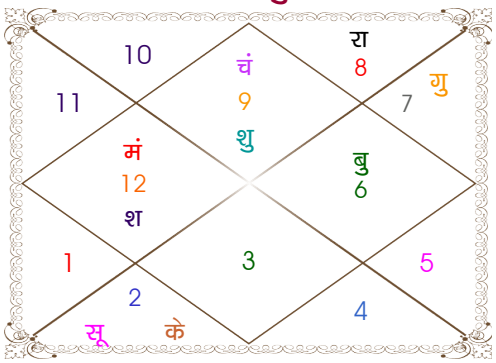

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA

VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209

9459311375

devprakash776@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	24:43:34	तुला	09:12:22
2	तुला	24:43:34	वृश्चिक	10:14:46
3	वृश्चिक	25:45:58	धनु	11:17:10
4	धनु	26:48:22	मकर	12:19:34
5	मकर	26:48:22	कुम्भ	11:17:10
6	कुम्भ	25:45:58	मीन	10:14:46
7	मीन	24:43:34	मेष	09:12:22
8	मेष	24:43:34	वृष	10:14:46
9	वृष	25:45:58	मिथुन	11:17:10
10	मिथुन	26:48:22	कर्क	12:19:34
11	कर्क	26:48:22	सिंह	11:17:10
12	सिंह	25:45:58	कन्या	10:14:46

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	09:12:22
2	वृश्चिक	08:04:59
3	धनु	09:22:09
4	मकर	12:19:34
5	कुम्भ	14:46:29
6	मीन	14:04:58
7	मेष	09:12:22
8	वृष	08:04:59
9	मिथुन	09:22:09
10	कर्क	12:19:34
11	सिंह	14:46:29
12	कन्या	14:04:58

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

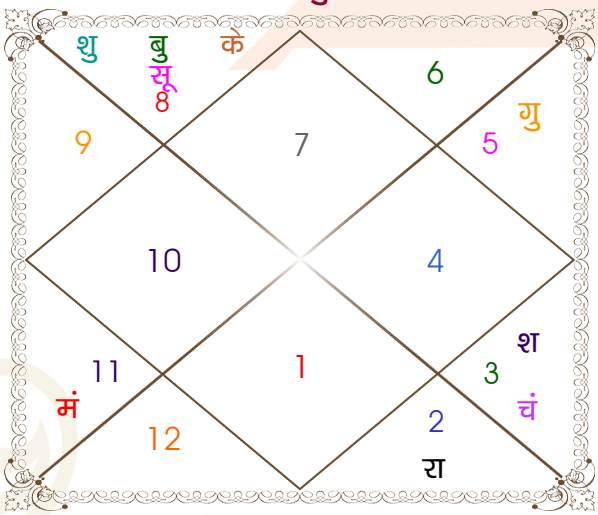

भाव कुंडली

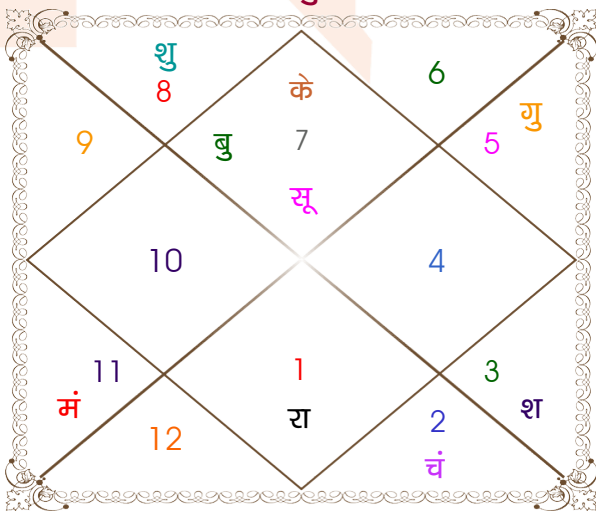

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 10 मास 17 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
13/11/2003		30/09/2018		30/09/2034		29/09/2053		30/09/2070	
30/09/2018		30/09/2034		29/09/2053		30/09/2070		29/09/2077	
	13/11/2003	गुरु	17/11/2020	शनि	02/10/2037	बुध	26/02/2056	केतु	26/02/2071
गुरु	05/11/2005	शनि	31/05/2023	बुध	12/06/2040	केतु	22/02/2057	शुक्र	27/04/2072
शनि	11/09/2008	बुध	05/09/2025	केतु	21/07/2041	शुक्र	24/12/2059	सूर्य	02/09/2072
बुध	31/03/2011	केतु	12/08/2026	शुक्र	20/09/2044	सूर्य	30/10/2060	चंद्र	03/04/2073
केतु	18/04/2012	शुक्र	12/04/2029	सूर्य	02/09/2045	चंद्र	31/03/2062	मंगल	30/08/2073
शुक्र	19/04/2015	सूर्य	29/01/2030	चंद्र	03/04/2047	मंगल	28/03/2063	राहु	17/09/2074
सूर्य	12/03/2016	चंद्र	31/05/2031	मंगल	12/05/2048	राहु	15/10/2065	गुरु	24/08/2075
चंद्र	11/09/2017	मंगल	06/05/2032	राहु	19/03/2051	गुरु	21/01/2068	शनि	02/10/2076
मंगल	30/09/2018	राहु	30/09/2034	गुरु	29/09/2053	शनि	30/09/2070	बुध	29/09/2077

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
29/09/2077		29/09/2097		01/10/2103		30/09/2113		30/09/2120	
29/09/2097		01/10/2103		30/09/2113		30/09/2120		00/00/0000	
शुक्र	29/01/2081	सूर्य	17/01/2098	चंद्र	31/07/2104	मंगल	27/02/2114	राहु	13/06/2123
सूर्य	29/01/2082	चंद्र	19/07/2098	मंगल	01/03/2105	राहु	17/03/2115	गुरु	14/11/2123
चंद्र	30/09/2083	मंगल	23/11/2098	राहु	31/08/2106	गुरु	21/02/2116		00/00/0000
मंगल	29/11/2084	राहु	18/10/2099	गुरु	31/12/2107	शनि	01/04/2117		00/00/0000
राहु	30/11/2087	गुरु	06/08/2100	शनि	01/08/2109	बुध	29/03/2118		00/00/0000
गुरु	31/07/2090	शनि	19/07/2101	बुध	31/12/2110	केतु	25/08/2118		00/00/0000
शनि	29/09/2093	बुध	26/05/2102	केतु	01/08/2111	शुक्र	25/10/2119		00/00/0000
बुध	30/07/2096	केतु	01/10/2102	शुक्र	01/04/2113	सूर्य	01/03/2120		00/00/0000
केतु	29/09/2097	शुक्र	01/10/2103	सूर्य	30/09/2113	चंद्र	30/09/2120		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 14 वर्ष 10 मा 11 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
31/05/2023		05/09/2025		12/08/2026		12/04/2029		29/01/2030	
05/09/2025		12/08/2026		12/04/2029		29/01/2030		31/05/2031	
बुध	25/09/2023	केतु	25/09/2025	शुक्र	21/01/2027	सूर्य	27/04/2029	चंद्र	11/03/2030
केतु	13/11/2023	शुक्र	21/11/2025	सूर्य	11/03/2027	चंद्र	21/05/2029	मंगल	08/04/2030
शुक्र	30/03/2024	सूर्य	08/12/2025	चंद्र	31/05/2027	मंगल	07/06/2029	राहु	20/06/2030
सूर्य	10/05/2024	चंद्र	05/01/2026	मंगल	27/07/2027	राहु	21/07/2029	गुरु	24/08/2030
चंद्र	18/07/2024	मंगल	25/01/2026	राहु	20/12/2027	गुरु	29/08/2029	शनि	09/11/2030
मंगल	04/09/2024	राहु	17/03/2026	गुरु	28/04/2028	शनि	14/10/2029	बुध	17/01/2031
राहु	07/01/2025	गुरु	02/05/2026	शनि	29/09/2028	बुध	24/11/2029	केतु	15/02/2031
गुरु	27/04/2025	शनि	25/06/2026	बुध	14/02/2029	केतु	11/12/2029	शुक्र	07/05/2031
शनि	05/09/2025	बुध	12/08/2026	केतु	12/04/2029	शुक्र	29/01/2030	सूर्य	31/05/2031

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
31/05/2031		06/05/2032		30/09/2034		02/10/2037		12/06/2040	
06/05/2032		30/09/2034		02/10/2037		12/06/2040		21/07/2041	
मंगल	20/06/2031	राहु	15/09/2032	शनि	23/03/2035	बुध	19/02/2038	केतु	05/07/2040
राहु	10/08/2031	गुरु	09/01/2033	बुध	25/08/2035	केतु	17/04/2038	शुक्र	11/09/2040
गुरु	25/09/2031	शनि	28/05/2033	केतु	28/10/2035	शुक्र	28/09/2038	सूर्य	01/10/2040
शनि	18/11/2031	बुध	29/09/2033	शुक्र	29/04/2036	सूर्य	16/11/2038	चंद्र	04/11/2040
बुध	05/01/2032	केतु	20/11/2033	सूर्य	22/06/2036	चंद्र	06/02/2039	मंगल	27/11/2040
केतु	25/01/2032	शुक्र	15/04/2034	चंद्र	22/09/2036	मंगल	04/04/2039	राहु	27/01/2041
शुक्र	22/03/2032	सूर्य	28/05/2034	मंगल	25/11/2036	राहु	30/08/2039	गुरु	22/03/2041
सूर्य	08/04/2032	चंद्र	10/08/2034	राहु	09/05/2037	गुरु	08/01/2040	शनि	25/05/2041
चंद्र	06/05/2032	मंगल	30/09/2034	गुरु	02/10/2037	शनि	12/06/2040	बुध	21/07/2041

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
21/07/2041		20/09/2044		02/09/2045		03/04/2047		12/05/2048	
20/09/2044		02/09/2045		03/04/2047		12/05/2048		19/03/2051	
शुक्र	30/01/2042	सूर्य	07/10/2044	चंद्र	20/10/2045	मंगल	27/04/2047	राहु	15/10/2048
सूर्य	29/03/2042	चंद्र	05/11/2044	मंगल	23/11/2045	राहु	27/06/2047	गुरु	03/03/2049
चंद्र	03/07/2042	मंगल	26/11/2044	राहु	18/02/2046	गुरु	20/08/2047	शनि	15/08/2049
मंगल	09/09/2042	राहु	17/01/2045	गुरु	06/05/2046	शनि	23/10/2047	बुध	09/01/2050
राहु	01/03/2043	गुरु	04/03/2045	शनि	05/08/2046	बुध	19/12/2047	केतु	11/03/2050
गुरु	03/08/2043	शनि	28/04/2045	बुध	26/10/2046	केतु	12/01/2048	शुक्र	01/09/2050
शनि	02/02/2044	बुध	16/06/2045	केतु	29/11/2046	शुक्र	19/03/2048	सूर्य	23/10/2050
बुध	15/07/2044	केतु	06/07/2045	शुक्र	05/03/2047	सूर्य	08/04/2048	चंद्र	17/01/2051
केतु	20/09/2044	शुक्र	02/09/2045	सूर्य	03/04/2047	चंद्र	12/05/2048	मंगल	19/03/2051

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 6, 2
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	83%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	75%	धन, भाग्योदय, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	72%	स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	70%	धन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	56%	सन्तति सुख, दम्पति, धन
माणिक्य	सूर्य	52%	स्वास्थ्य, धनार्जन
पुखराज	गुरु	47%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

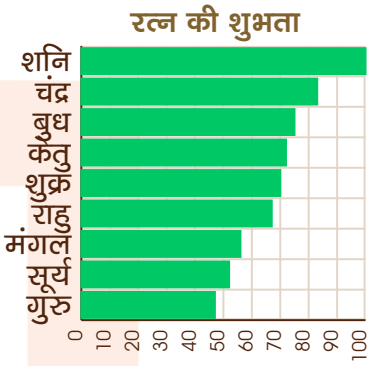

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	30/09/2018	28%	70%	38%	75%	47%	77%	100%	80%	59%
गुरु	30/09/2034	58%	89%	62%	62%	61%	58%	100%	67%	72%
शनि	29/09/2053	28%	70%	38%	81%	47%	77%	100%	73%	59%
बुध	30/09/2070	58%	70%	56%	88%	47%	77%	100%	67%	72%
केतु	29/09/2077	28%	70%	62%	75%	47%	77%	91%	55%	84%
शुक्र	29/09/2097	28%	70%	56%	81%	47%	83%	100%	73%	78%
सूर्य	01/10/2103	64%	89%	62%	75%	55%	58%	91%	55%	59%
चंद्र	30/09/2113	58%	95%	56%	81%	47%	70%	100%	55%	59%
मंगल	30/09/2120	58%	89%	69%	62%	55%	70%	100%	55%	78%

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	13/11/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(30/09/2018 - 30/09/2034)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 30/09/2018 शुरू तथा 30/09/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएंगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप साहित्यिक तथा धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन जारी रखेंगे।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(31/05/2023 - 05/09/2025)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 30/09/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 31/05/2023 को प्रारंभ होकर 05/09/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश और कुशल नियोजन से धनी बनेंगे। आपकी विवेकशक्ति उत्तम है। नौजवान लोगों की संगत और आमोद-प्रमोद से खुशियां मिलेंगी। उच्चपद, धनलाभ, उच्चाधिकारियों से सहयोग, सफलता और प्रसन्नता का संकेत है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी के जीवनस्तर में उत्थान होगा। आपके पिता को मानसिक और घरेलू सुख मिलेगा। माता के नये मित्र बनेंगे, सम्मानित होंगी, संतुष्ट रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए खर्चे, शत्रुओं पर विजय, पर्याप्त मित्र, अचल संपत्ति और माता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता धनी और सौभाग्यशाली बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आंखों और गले के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गाय को हरा चारा या सब्जियां खिलाएं।

अंर्तदशा :- गुरु - केतु
(05/09/2025 - 12/08/2026)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 30/09/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 05/09/2025 को प्रारंभ होकर 12/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। बुद्धिमत्ता उत्तम रहेगी। अंतर्ज्ञान का विकास होगा। आत्मविश्वास से पूर्ण रहेंगे। कभी-कभी संन्यास की भावना जागृत हो सकती है। साधु-संतों की संगत करेंगे। व्यापार में अचानक विस्तार हो सकता है, विरोधियों पर विजय होगी, साझेदारी से लाभ होगा। यात्रा और समाज में सफलता की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता के लिए निवेश

लाभदायी हो सकता है। माता की तीर्थयात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, लोकप्रियता, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा और अचल संपत्ति का संकेत है।

आपकी संतान के पिता से अच्छे संबंध रहेंगे, शिक्षा उत्तम होगी, भाग्यशाली रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, अध्यात्म में रुचि होगी, बचत से धन का संचय होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, सेवानिवृत्ति लाभ और ग्रेच्युटी आदि से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। व्यापारियों को यात्रा और साझेदारी से लाभ होगा।

नेत्र, उदर और मुख की व्याधिओं से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(12/08/2026 - 12/04/2029)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 30/09/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 12/08/2026 को प्रारंभ होकर 12/04/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपके पास पर्याप्त सुख के साधन उपलब्ध रहेंगे। धन का संचय होगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेंगे। सुंदर वस्तुएं क्रय करेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। हर प्रकार से यह समय भाग्यशाली रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। वसीयत से धनलाभ हो सकता है। मित्रों से संबंध मधुर रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। माता सफल होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन का संचय, शत्रुओं पर विजय, समृद्धि, उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति और सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान लोकप्रिय और सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो आय अच्छी होगी, जीवन सुखी रहेगा, पर्याप्त मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी, भाग्य चमकेगा। परामर्शदाताओं का धनलाभ उत्तम होगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, अप्रत्याशित लाभ संभव है। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(12/04/2029 - 29/01/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 30/09/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/04/2029 को प्रारंभ होकर 29/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। तरक्की करने के लिए यह समय बहुत अच्छा है। आप में नेतृत्वक्षमता उत्तम है। उच्चाधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे। सरकार से सम्मान मिल सकता है। इच्छाएं पूर्ण होंगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, आपकी छवि उत्तम होगी। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इस से नीति और धैर्य द्वारा बचा जा सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को व्यापार से लाभ हो सकता है। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता, सफल और धनी बनेंगी, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उच्चपद, धन, इच्छाओं की पूर्ति और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे। परामर्शदाता भी सफल रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकारों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com